Rabiul Avval Ki Khubiyan (Hindi)

रबीउ़ल अव्वल की ख़ूबियां

सफ़हात 17

- पीर के दिन के बारे में दिलचस्प मा'लूमात 03
- आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का जन्नत में पड़ोस पाने का अ़मल 08
- 1000 साल की इबादत का सवाब 09
- ज़ियारते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीफ़े 09
- ख़ुश रहने का वज़ीफ़ा 11

पेशकश : मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُهُمُ الْعَالِیَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (اَلْمُستطرَف ج۱ ص۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला "**रबीउ़ल अव्वल की ख़ूबियां**"

मजलिसे **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है।

इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 98987 32611 • E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

रबीउ़ल अव्वल की ख़ूबियां

दुआए अ़त्तार

या अल्लाह पाक ! जो कोई 17 सफ़ह़ात का रिसाला "रबीउ़ल अव्वल की ख़ूबियां" पढ़ या सुन ले उस को इस बा बरकत महीने की बरकतों से मालामाल फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمِيْن بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी मुह़म्मदे मदनी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने शफ़ाअ़त निशान है : जो शख़्स सुब्ह़ो शाम मुझ पर दस दस बार दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा, बरोज़े क़ियामत मेरी शफ़ाअ़त उसे पहुंच कर रहेगी।

(اَلتَّرْغِيب وَالتَّرْہِيب، ۱/۲۶۱، حدیث: ۲۹، دار الکتب العلمیۃ بیروت)

शफ़ाअ़त करे ह़श्र में जो रज़ा की सिवा तेरे किस को येह क़ुदरत मिली है

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

रबीउ़ल अव्वल की शान

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रबीउ़ल अव्वल इस्लामी साल का तीसरा (3rd) महीना है। येह महीना फ़ज़ीलतों और सआ़दतों का मज्मूआ़ है क्यूं कि वोह ज़ाते पाक जिन को **अल्लाह** करीम ने तमाम जहानों के लिये रह़मत बना कर भेजा वोह अ़ज़मतों वाले नबी, ख़ातमुन्नबिय्यीन صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इसी माहे मुबारक में दुन्या में तशरीफ़ लाए और यूं इस महीने को सब फ़ज़ीलतें और सआ़दतें हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (Birth) के सदक़े नसीब हुईं।

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम ज़करिय्या बिन मुह़म्मद बिन मह़मूद क़ुज़वैनी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : येह वोह मुबारक महीना है जिस में

अल्लाह पाक ने अपने आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वुजूदे मस्ऊ़द (या'नी बा बरकत ज़ात) के सदके़ दुन्या वालों पर भलाइयों और सआ़दतों के दरवाजे़ खोल दिये हैं इसी महीने की बारह तारीख़ को **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत (Birth) हुई ।[1]

रबीए़ पाक तुझ पर अहले सुन्नत क्यूं न कु़रबां हों

कि तेरी बारहवीं तारीख़ वोह जाने क़मर आया[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

"रबीउ़ल अव्वल" कहने की वज्ह

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! **"रबीअ़"** मौसिमे बहार या'नी सर्दी और गर्मी के दरमियान के मौसिम को कहते हैं। अहले अ़रब मौसिमे बहार के शुरूअ़ के ज़माने को "रबीउ़ल अव्वल" कहते थे इस में खुम्बी (Mushroom)[3] और फूल पैदा होते थे और जिस वक़्त फलों की पैदावार होती तो उन दिनों को रबीउ़ल आख़िर कहते थे। जब महीनों के नाम रखे गए तो सफ़र के बा'द वाले दो महीनों को इन्ही दो मौसिमों के नामों पर रबीउ़ल अव्वल और रबीउ़ल आख़िर का नाम दिया गया ।[4]

रबीउ़ल अव्वल की अ़ज़मतों की वज्ह

रबीउ़ल अव्वल की अ़ज़मतों के क्या कहने ! यक़ीनन हु़ज़ूरे अन्वर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दुन्या में तशरीफ़ न लाते तो कोई ईद, ईद होती, न कोई शब, शबे बराअत। बल्कि कौनो मकां की तमाम तर रौनक़ और शान इस

1...عجائب المخلوقات، ص۲۸، بیروت.

2... क़बालए बख़्शिश, स. 37, ज़ियाउद्दीन पब्लीकेशन्ज़

3... बरसात में गली लकड़ी के भीगने से छतरी की त़रह़ एक घास उग जाती है इसे अ़रबी में كَمْأَة، شَحْمُ الْاَرض, उर्दू में खुम्बी और चित्रमार कहते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 6/20, ज़ियाउल कु़रआन)

4...لسان العرب، ۱/۱۴۳۵ملخصاً، بیروت.

जाने जहान, महबूबे रह़मान صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के क़दमों की धूल का सदक़ा है । इस मुबारक महीने की बारहवीं तारीख़ बहुत ही सआ़दतों और अ़ज़मतों वाली है येह तारीख़ आ़शिक़ाने रसूल के लिये ईदों की भी ईद है ।[1]

सह़ाबे रह़मते बारी है बारहवीं तारीख़

करम का चश्मए जारी है बारहवीं तारीख़[2]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

पीर के दिन के बारे में दिलचस्प मा'लूमात

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हम सब के प्यारे नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत का दिन पीर शरीफ़ (Monday) होने के साथ साथ येह दिन और भी कई वुजूहात की वज्ह से अहम है । चुनान्चे सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا बयान फ़रमाते हैं कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर के दिन पैदा हुए और पीर के दिन ही आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने ए'लाने नुबुव्वत फ़रमाया, मक्कए पाक से हिजरत करते हुए पीर के दिन रवाना हुए और मदीनए मुनव्वरह में पीर के दिन ही दाख़िल हुए, पीर के दिन इन्तिक़ाल शरीफ़ हुवा और आप ने ह़जरे अस्वद को पीर के दिन ही नस्ब फ़रमाया ।[3] एक रिवायत के मुत़ाबिक़ ग़ज़्वए बद्र में फ़त्ह़ भी पीर के दिन मिली ।[4]

1...لطائف المعارف، ص۱۰۴، المكتبة العصرية، بيروت، مواہب اللدنية، المقصد الاول، آيات ولادته۔۔۔الخ، ۱/۷۵، دار الكتب العلمية، بيروت.

2... ज़ौक़े ना'त, स. 121, मक्तबतुल मदीना

3...مسند احمد، مسند عبد الله بن العباس۔۔۔الخ، ۱/۵۹۴، حديث: ۲۵۰۶، دار الفكر، بيروت.

4...معجم كبير، أحاديث عبد الله بن العباس۔۔۔الخ، ۱۲/ ۱۸۳، حديث: ۱۲۹۸۴، دار احياء التراث، بيروت.

वक़्ते विलादत

मश्हूर मुह़द्दिस ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद बिन अ़ब्दुल्लाह अल मा'रूफ़ इब्ने नासिरुद्दीन दिमश्क़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : सह़ीह़ येह है कि नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत तुलूए फ़ज्र (सुब्हे सादिक़) के वक़्त हुई और इसी को मुह़द्दिसीन ने सह़ीह़ क़रार दिया है।(1)

क़ुरबान ऐ दोशम्बा तुझ पर हज़ार जुमुए   वोह फ़ज़्ल तू ने पाया सुब्हे शबे विलादत

प्यारे रबीउ़ल अव्वल तेरी झलक के सदक़े   चमका दिया नसीबा सुब्हे शबे विलादत (2)

शबे क़द्र से अफ़्ज़ल रात

उ़लमाए किराम ने इस बात को वाज़ेह़ अल्फ़ाज़ में तह़रीर फ़रमाया है कि जिस रात, हमारे प्यारे प्यारे आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादते बा सआ़दत हुई वोह शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल है। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देह्लवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه लिखते हैं : बेशक सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत की रात शबे क़द्र से भी अफ़्ज़ल है।(3)

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अबू अ़ब्दुल्लाह मुह़म्मद बिन अह़मद मरज़ूक़ तिल्मसानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने शबे विलादते मुस्त़फ़ा के शबे क़द्र से अफ़्ज़ल होने पर "جَنَى الْجَنَّتَيْنِ فِيْ شَرَفِ اللَّيْلَتَيْنِ" के नाम से एक किताब लिखी है जिस में दोनों रातों के फ़ज़ाइल और शबे विलादत के अफ़्ज़ल होने पर दलाइल बयान फ़रमाए हैं।

1...جامع الآثار، مطلب فی زمان مولدہ۔۔۔ الخ، ۲/۷۵۷، دار الکتب العلمیة، بیروت.

2... ज़ौक़े ना'त, स. 96

3...ماثبت من السنة، ص۱۰۰، ادارہ نعیمیہ رضویہ، لاہور.

वोह जो न थे तो कुछ न था वोह जो न हों तो कुछ न हो

जान हैं वोह जहान की जान है तो जहान है[(1)]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب   صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

रबीउ़ल अव्वल कैसे गुज़ारें ?

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत ईमान की बुन्याद है और मह़ब्बत की एक अ़लामत येह है कि मह़बूब का कसरत से ज़िक्र किया जाए । रिवायत में है : ''مَنْ اَحَبَّ شَیْئًا اَکْثَرَ مِنْ ذِکْرِہٖ'' या'नी जो किसी से मह़ब्बत करता है उस का कसरत से ज़िक्र करता है ।[(2)] यूं तो सारा साल ही हमें नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे ख़ैर करना और अपने क़ौलो फ़े'ल के ज़रीए आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से मह़ब्बत का इज़्हार करना चाहिये लेकिन बिल ख़ुसूस रबीउ़ल अव्वल में **अल्लाह** करीम की इस अ़ज़ीम ने'मत के शुक्राने के त़ौर पर ज़िक्रे ह़बीब की कसरत करनी चाहिये और इस ज़िक्र के कई त़रीक़े हैं मसलन नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पर दुरूदे पाक पढ़ना, ना'त शरीफ़ पढ़ना, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शानो अ़ज़मत बयान करना, (मह़ल्ले दारों, राह चलने वालों वग़ैरा और ह़ुक़ूक़े आ़म्मा का ख़याल रखते हुए शरीअ़त के मुत़ाबिक़) मह़फ़िले मीलाद करना और इस में शरीक होना वग़ैरा ज़िक्रे रसूल हैं, लिहाज़ा रबीउ़ल अव्वल में येह तमाम चीज़ें हमारे मा'मूलात में शामिल होनी चाहिएं ।

ए'लान करवाइये

चांदरात को इन अल्फ़ाज़ में तीन बार मसाजिद में ए'लान

1... ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 178, मक्तबतुल मदीना

2...جامع صغیر، حرف المیم، ص۵۰۷، حدیث: ۸۳۱۲، دار الکتب العلمیۃ، بیروت.

करवाइये : **''तमाम इस्लामी भाइयों और इस्लामी बहनों को मुबारक हो कि रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ का चांद नज़र आ गया है।''**

रबीउ़ल अव्वल उम्मीदों की दुन्या साथ ले आया दुआ़ओं की क़बूलिय्यत को हाथों हाथ ले आया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

मक्तूबे अ़त्तार की झल्कियां

अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के रिसाले **सुब्हे बहारां** से चन्द मदनी फूल पढ़िये : (1) **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में मस्जिदों, घरों, दुकानों और सुवारियों पर नीज़ अपने मह़ल्ले में भी सब्ज़ सब्ज़ परचम लहराइये, ख़ूब चरागां कीजिये अपने घर पर कम अज़ कम बारह बल्ब तो ज़रूर रोशन कीजिये। (2) **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में बा'ज़ जगह गाने बाजे बजाए जाते हैं ऐसा करना शर्अ़न गुनाह है। (3) **ना'ते पाक** बेशक चलाइये मगर धीमी आवाज़ में और इस एह़तियात़ के साथ कि किसी इबादत करने वाले, सोते हुए या मरीज़ वग़ैरा को तक्लीफ़ न हो नीज़ अज़ान व अवक़ाते नमाज़ की भी रिआ़यत कीजिये। (औ़रत की आवाज़ में ना'त की केसिट मत चलाइये) (4) **गली** या सड़क वग़ैरा पर इस त़रह़ सजावट करना, परचम गाड़ना जिस से रास्ता चलने और गाड़ी चलाने वाले मुसल्मानों को तक्लीफ़ हो, ना जाइज़ है। (5) **चरागां** देखने के लिये औ़रतों का अजनबी मर्दों में बे पर्दा निकलना ह़राम व शर्मनाक नीज़ बा पर्दा औ़रतों का भी मुरव्वजा अन्दाज़ में मर्दों में इख़्तिलात़ (या'नी ख़ल्त़ मल्त़ होना) इन्तिहाई अफ़्सोस नाक है। (6) **अपने** रब से हम गुनहगारों को बख़्शवाने वाले प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पीर शरीफ़ को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते रहे। आप भी यादे

मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم में 12 रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ को रोज़ा रख लीजिये। (7) **ग्यारह** की शाम को वरना बारहवीं शरीफ़ की रात को ग़ुस्ल कीजिये। हो सके तो इस ईदों की ईद की ता'ज़ीम की निय्यत से ज़रूरत की तमाम चीज़ें नई ख़रीद लीजिये। (8) **जश्ने विलादत** की ख़ुशी में कोई भी ऐसा काम मत कीजिये जिस से हुक़ूक़ुल इबाद ज़ाएअ़ हों। (9) **तमाम** इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें जश्ने विलादत की ख़ुशी में सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की निय्यत कर लीजिये। (10) **जश्ने विलावत** की ख़ुशी में लाइटिंग कीजिये लेकिन बिजली फ़राहम करने वाले इदारे से राबित़ा कर के जाइज़ ज़राएअ़ से लाइटिंग कीजिये। (11) **जुलूस** में ह़त्तल इम्कान बा वुज़ू रहिये और नमाज़े बा जमाअ़त की पाबन्दी का ख़याल रखिये। (12) **जुलूस** में "तक़्सीमे रसाइल" कीजिये या'नी **मक्तबतुल मदीना** की कुतुबो रसाइल नीज़ मुख़्तलिफ़ मेमोरी कार्ड्ज़ वग़ैरा ख़ूब तक़्सीम कीजिये। खाने की चीज़ें फल वग़ैरा तक़्सीम करने में फेंकने के बजाए लोगों के हाथों में दीजिये, ज़मीन पर गिरने बिखरने और क़दमों तले कुचलने से इन की बे हुर्मती होती है। इश्तिआ़ल अंगेज़ ना'रेबाज़ी पुर वक़ार जुलूसे मीलाद को मुन्तशिर कर सकती है, पुर अम्न रहने में आप की अपनी भलाई है। ख़ुदा न ख़्वास्ता अगर कहीं हलका फुलका पथराव हो भी जाए तब भी जज़्बात में आ कर जवाबी कारवाई पर न उतर आएं कि इस त़रह़ आप का जुलूसे मीलाद तित्तर बित्तर और दुश्मन की मुराद बारआवर.....

ग़ुन्चे चटके, फूल महके हर त़रफ़ आई बहार हो गई सुब्हे बहारां ईदे मीलादुन्नबी

(वसाइले बख़्शिश, स. 465)

(मज़ीद मा'लूमात के लिये रिसाला "सुब्हे बहारां" का मुत़ालआ़ कीजिये।)

www.dawateislamihind.net

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

रबीउ़ल अव्वल के नवाफ़िल

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह करीम का क़ुर्ब पाने और उस की रिज़ा हासिल करने का एक बेहतरीन ज़रीआ़ नवाफ़िल भी हैं, बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم फ़राइज़ो वाजिबात के साथ साथ नवाफ़िल की कसरत फ़रमाया करते थे ।

जन्नत में आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पड़ोस

बारहवीं तारीख़ को नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रूहे पाक को तोहफ़ा पहुंचाने की निय्यत से 20 रक्अ़त नफ़्ल पढ़िये और हर रक्अ़त में सूरए फ़ातिहा के बा'द 21 मरतबा सूरए इख़्लास (قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَد) पढ़िये। एक शख़्स हमेशा येह नमाज़ पढ़ता था उसे ख़्वाब में नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत हुई आप صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم फ़रमा रहे थे कि हम तुम्हें अपने साथ जन्नत में ले कर जाएंगे ।[1]

बाग़े जन्नत में जवार अपना अ़ता फ़रमा दो ख़ुल्द में हर घड़ी जल्वा मैं तुम्हारा देखूं

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

बारह रबीउ़ल अव्वल का रोज़ा

12 रबीउ़ल अव्वल के दिन रोज़ा रखिये कि हुज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की विलादत के दिन रोज़ा रखना **अल्लाह** पाक की ने'मत का शुक्र है और इस में बहुत ज़ियादा अज्रो सवाब भी है। ख़ुद नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हर पीर शरीफ़ (Monday) को रोज़ा रख कर अपना यौमे विलादत मनाते थे जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू क़तादा رَضِیَ اللهُ عَنْه फ़रमाते हैं : बारगाहे रिसालत में पीर के रोज़े के बारे में पूछा गया तो इर्शाद फ़रमाया : ''इसी

1... जवाहिरे ख़म्सा, स. 21

दिन मेरी विलादत हुई और इसी रोज़ मुझ पर वही नाज़िल हुई।''[1]

ने'मत के शुक्राने में रोज़ा

बिला शुबा रह़मते आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की तशरीफ़ आवरी की ने'मत से दुन्या व आख़िरत के फ़वाइद व मनाफ़ेअ़ पूरे हो गए और इसी ने'मत के तुफ़ैल **अल्लाह** पाक का दीन मुकम्मल हुवा जिसे उस ने अपने बन्दों के लिये पसन्द फ़रमाया और इस दीन को क़बूल करना दुन्या व आख़िरत में लोगों की सआ़दत मन्दी का सबब है। और ऐसे दिन का रोज़ा रखना बहुत अच्छा है जिस में **अल्लाह** पाक के बन्दों पर उस की ने'मतें नाज़िल होती हैं।[2]

1000 साल की इबादत का सवाब

अल्लाह पाक की अ़ज़ीम ने'मत का शुक्र अदा करने के लिये इस माहे मुबारक में ज़ियादा से ज़ियादा नफ़्ली इबादात कीजिये। **जवाहिरे ग़ैबी** में है कि 12 रबीउ़ल अव्वल के दिन रोज़ा रखने वाले को 1000 साल की इबादत का सवाब मिलता है नीज़ पांच, सोलह और छब्बीस रबीउ़ल अव्वल को रोज़ा रखने का भी बहुत सवाब है।[3]

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ज़ियारते रसूल صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के वज़ीफ़े

(1) रबीउ़ल अव्वल शरीफ़ में दुरूद शरीफ़ कसरत से पढ़िये। पहली तारीख़ से 12 तारीख़ तक रोज़ाना एक हज़ार मरतबा येह दुरूदे पाक पढ़ना अफ़्ज़ल है : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِ ِالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ۔

1...مسلم، کتاب الصیام، باب استحباب صیام ثلاثۃ۔الخ، ص۴۵۵، حدیث: ۲۷۵۰، دار الکتب العربی، بیروت.

2...لطائف المعارف، ص۱۰۷.

3... जवाहिरे ग़ैबी, स. 617, मत्बअ़ मुन्शी नवल किशोर, लखनउ

जो शख़्स येह दुरूद शरीफ़ पढ़ कर बा वुज़ू सोए اِنْ شَآءَاللّٰه ज़ियारते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नसीब होगी ।[1]

मुझे या नबी ! तेरी दीद हो, तेरी दीद हो मेरी ईद हो
तुझे जिस ने देखा हज़ार बार, उसे फिर भी तिश्ना लबी रही

(वसाइले बख़्शिश)

(2) जो कोई इस महीने की तमाम तारीख़ों में इ़शा की नमाज़ के बा'द येह दुरूदे पाक ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ'' 1125 मरतबा पढ़े तो اِنْ شَآءَاللّٰه ख़्वाब में ज़रूर नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा ।[2]

नबी की दीद हमारी है ईद या अल्लाह अ़ता हो ख़्वाब में दीदारे मुस्त़फ़ा या रब !

(वसाइले बख़्शिश)

(3) अगर कोई इस मुबारक महीने में येह दुरूद शरीफ़ ''اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰه'' सवा लाख मरतबा पढ़े तो हुज़ूरे पुरनूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से नवाज़ दिया जाएगा ।[3]

कभी तो मुझे ख़्वाब में मेरे मौला हो दीदारे माहे अ़रब या इलाही

(4) मुह़िब्बे आ'ला ह़ज़रत अ़ल्लामा शाह मुह़म्मद रुक्नुद्दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : जब रबीउ़ल अव्वल का चांद नज़र आए तो इस रात 2-2 रक्अ़त कर के 16 रक्अ़त नफ़्ल पढ़े । हर रक्अ़त में अल ह़म्द शरीफ़ के बा'द ''قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَد'' तीन तीन मरतबा पढ़े । जब 16 रक्अ़त पढ़ ले तो

1... इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 37, अ़त्तारी पब्लीशर्ज़
2... रुक्ने दीन, स. 164, शब्बीर बिरादर्ज़
3... रुक्ने दीन, स. 164

येह दुरूद शरीफ़ एक हज़ार मरतबा पढ़े : ''اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ ﹰالنَّبِيِّ الْاُمِّيِّ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُه'' और 12 रोज़ तक येह पढ़ता रहे तो हु़ज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़्वाब में ज़ियारत होगी । मगर इ़शा की नमाज़ के बा'द इस को पढ़ा करे और फिर बा वुज़ू सोया करे ।[1]

मदनी फूल : ज़ियारते रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ता़लिब को ह़लाल खाने, सच बोलने और सुन्नते ह़बीबे ख़ुदा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का पाबन्द रहना ज़रूरी है और बा वुज़ू सोए ।[2]

दीदार के क़ाबिल तो नहीं चश्मे तमन्ना
लेकिन वोह कभी ख़्वाब में आएं तो अ़जब क्या

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

ख़ुश रहने का वज़ीफ़ा

जो कोई रबीउ़ल अव्वल की बारहवीं तारीख़ को येह कलिमात पढ़े वोह पूरा साल ख़ुश रहेगा और येह भी मन्कूल है कि वोह बे ह़िसाब जन्नत में जाएगा । वोह कलिमात येह हैं : بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْم (7 बार) يَا اَللّٰهُ (7 बार) يَا رَحْمٰنُ (7 बार) يَا رَحِيْمُ (7 बार) يَا غَفُوْرُ (7 बार) يَا حَنَّانُ (7 बार) يَا مَنَّانُ (7 बार) يَا دَيَّانُ (7 बार) يَا سُبْحَانُ (7 बार) ।[3]

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **अल्लाह** करीम की अ़ज़ीम ने'मतो रह़मत हैं और रह़मते इलाही मिलने पर ख़ुशी मनाने और ने'मते ख़ुदावन्दी का चरचा करने का हुक्म तो ख़ुद **अल्लाह** पाक ने इर्शाद फ़रमाया है जैसा कि इर्शादे बारी तआ़ला है :

1... रुक्ने दीन, स. 164
2... इस्लामी महीनों के फ़ज़ाइल व मसाइल, स. 37 मुलख़्ख़सन
3... जवाहिरे ख़म्सा मुतर्जम, स. 101

(1) قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿۵۸﴾ (پ11، یونس:58)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ **अल्लाह** ही के फ़ज़्ल और उसी की रह़मत और उसी पर चाहिये कि ख़ुशी करें वोह उन के सब धन दौलत से बेहतर है।

(2) وَ اَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ (پ30، الضحی:11)

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दुन्या भर में मुसल्मान इस हुक्मे क़ुरआनी पर अ़मल करते हुए माहे रबीउ़ल अव्वल में मीलाद की मह़फ़िलें सजाते हैं जिस में प्यारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे विलादत और आप की शानो अ़ज़मत बयान की जाती है जो एक मुस्तह़ब और आ'ला तरीन काम है।

विलादते शहे दीं हर ख़ुशी की बाइ़स है

हज़ार ईद से भारी है बारहवीं तारीख़ (1)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मीलाद शरीफ़ का मक़्सद

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! मजलिसे मीलादे पाक अफ़्ज़ल तरीन मन्दूबात (मुस्तह़ब्बात) और आ'ला तरीन मुस्तह़्सनात (नेक कामों में) से है।(2) ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रह़मान बिन जौज़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मीलाद मनाने में शैत़ान की तज़्लील (या'नी ज़िल्लतो रुस्वाई) और अहले ईमान की तक़्वियत (या'नी मज़बूत़ी) है।(3)

1... ज़ौक़े ना'त, स. 122

2... अल ह़क़्क़ुल मुबीन, स. 100, मक्तबतुल मदीना

3...سبل الهدی و الرشاد، الباب الثالث عشر فی اقوال العلماء۔۔۔الخ، ۱/۳۶۳، دار الکتب العلمیة، بیروت.

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम जलालुद्दीन अ़ब्दुर्रह़मान सुयूत़ी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : नबिय्ये पाक صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत मनाने वाले को सवाब मिलता है कि इस में हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ता'ज़ीम और आप की विलादते बा सआ़दत पर खुशी व शादमानी का इज़्हार है। हमारे लिये मुस्तह़ब है कि हुज़ूर صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत पर इज़्हारे शुक्र के लिये इज्तिमाअ़ करें, खाना खिलाएं और इसी त़रह़ की दूसरी नेकियां करें नीज़ खुशी व मसर्रत का इज़्हार करें।(1)

रहेगा यूं ही उन का चरचा रहेगा   पड़े ख़ाक हो जाएं जल जाने वाले

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب   صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

मीलाद शरीफ़ के फ़ाएदे

अल्लाह करीम की त़रफ़ से जश्ने विलादत मनाने वालों को बे शुमार दीनी व दुन्यावी फ़वाइद मिलते हैं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम इब्ने जौज़ी رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : जश्ने विलादत पर फ़रह़तो मसर्रत करने वाले के लिये येह खुशी जहन्नम से रुकावट बनेगी, जो जश्ने विलादत की खुशी में एक दिरहम ख़र्च करे तो नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उस की शफ़ाअ़त फ़रमाएंगे, रब्बे करीम उसे एक दिरहम के बदले 10 दिरहम अ़त़ा फ़रमाएगा। ऐ उम्मते मह़बूब ! तुम्हारे लिये खुश ख़बरी हो, तुम दुन्या व आख़िरत में ख़ैरे कसीर के ह़क़दार क़रार पाए। ह़ज़रते सय्यिदुना अह़मदे मुज्तबा صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का जश्ने विलादत मनाने वाले को बरकत, इ़ज़्ज़त, भलाई और फ़ख़्र मिलेगा, मोतियों का इमामा और सब्ज़ हुल्ला (या'नी लिबास) पहन कर वोह दाख़िले जन्नत होगा।(2)

1...الحاوی للفتاوی، حسن المقصد فی عمل المولد، ۱/۲۲۲، ۲۳۰، دار الفکر، بیروت.

2...مجموع لطیف الانسی، مولد العروس، ص۲۸۱، دار الکتب العلمیة، بیروت.

ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम अह़मद बिन मुह़म्मद क़स्त़लानी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : विलादते बा सआ़दत के दिनों में मह़फ़िले मीलाद करने के फ़वाइद में से तजरिबा शुदा फ़ाएदा है कि इस साल अम्नो अमान रहता है । **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर रह़मत नाज़िल फ़रमाए जिस ने माहे विलादत की रातों को ईद बना लिया ।[1]

शैख़े मुह़क़्क़िक़, ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिस देह्लवी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : हमेशा से ही मुसल्मान हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की विलादत के महीने में (मीलाद की) मह़फ़िलें करते हैं और इस महीने की रातों में ख़ूब सदक़ा व ख़ैरात करते हैं । उन लोगों पर इस अ़मल की बरकत से हर क़िस्म की बरकतें ज़ाहिर होती हैं । इस मह़फ़िले मीलाद के ख़ुसूसी मुजर्रबात में से येह है कि वोह साल भर तक अमान पाते हैं और इस में ह़ाजत रवाई, मक़्सूद बरआरी (या'नी मुरादें पूरी होने) की बड़ी बिशारत है । **अल्लाह** पाक उस शख़्स पर बहुत ज़ियादा रह़मतें नाज़िल फ़रमाए जिस ने मीलादे मुबारक के दिन को ईद बनाया ।[2]

नूर की फूहार बरसी चार सू है रोशनी हो गया घर घर चराग़ां ईदे मीलादुन्नबी
चार जानिब धूम है सरकार के मीलाद की झूमता है हर मुसल्मां ईदे मीलादुन्नबी[3]

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी और जश्ने विलादत

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! आ़शिक़ाने रसूल की मदनी तह़रीक, दा'वते इस्लामी का **जश्ने विलादत** मनाने का अपना एक मुन्फ़रिद अन्दाज़ है, दुन्या के बे शुमार ममालिक में दा'वते इस्लामी के ज़ेरे एहतिमाम ईदे मीलादुन्नबी

1...مواہب اللدنیۃ، المقصد الاول، ذکر رضاعہ ومامعہ، ۱/۷۸.

2...ماثبت من السنۃ، ص ۱۰۲، ملتقطاً.

3... वसाइले बख़्शिश, स. 379, मक्तबतुल मदीना

صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शब को अ़ज़ीमुश्शान इज्तिमाए़ मीलाद होता है और एक बहुत बड़ा इज्तिमाए़ मीलाद आ़लमी मदनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना में होता है। इस की बरकतों के क्या कहने ! इस में शिर्कत करने वाले न जाने कितने ही ख़ुश नसीबों की ज़िन्दगियों में मदनी इन्क़िलाब बरपा हो जाता है, एक आ़शिक़े रसूल का कुछ इस त़रह़ का बयान है : शबे ईदे मीलादुन्नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم में दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले बड़ी रात के ग़ालिबन दुन्या के सब से बड़े इज्तिमाए़ मीलाद में हम चन्द इस्लामी भाई ह़ाज़िर हुए। बर सबीले तज़्किरा एक इस्लामी भाई कहने लगे : दा'वते इस्लामी के इज्तिमाए़ मीलाद में पहले काफ़ी रिक़्क़त हुवा करती थी अब वोह बात नहीं रही। येह सुन कर दूसरा बोला : यार ! आप की यहां भूल हो रही है, इज्तिमाए़ मीलाद की कैफ़िय्यत तो वोही है मगर हमारे दिलों की कैफ़िय्यत पहले की सी नहीं रही, ज़िक्रे रसूल صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم भला कैसे बदल सकता है ! हमारी ज़ेहनिय्यत तब्दील हो गई है ! अगर आज भी हम तन्क़ीद की ख़ुश्क वादियों में भटक्ने के बजाए बसद अ़क़ीदत ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़सीन तसव्वुर में डूब कर ना'त शरीफ़ सुनें तो اِنْ شَآءَاللّٰہ करम बालाए करम होगा। पहले इस्लामी भाई का शैत़ानी वस्वसों पर मब्नी ग़ैर ज़िम्मेदाराना ए'तिराज़ अगर्चे क़दमों को मुतज़ल्ज़ल कर के, बोरियत दिला कर इज्तिमाए़ मीलाद से मह़रूम कर के वापस घर पहुंचाने वाला था मगर दूसरे इस्लामी भाई का जवाब सद करोड़ मरह़बा ! कि वोह नफ़्से लव्वामा को जगाने वाला और शैत़ान को भगाने वाला था। चुनान्चे वोह जवाबे बिस्सवाब तासीर का तीर बन कर मेरे जिगर में पैवस्त हो गया मैं ने हिम्मत की, क़दम उठाए और **इज्तिमाए़ मीलाद** के वस्त़ (बीच) में जा पहुंचा और आ़शिक़ाने रसूल के अन्दर जम

कर बैठ गया और ना'तों के पुरकैफ़ नग़मों में खो गया। **सुब्हे सादिक़** का सुहाना वक़्त क़रीब आया, तमाम आ़शिक़ाने रसूल **सुब्हे बहारां** के इस्तिक़्बाल के लिये खड़े हो गए, इज्तिमाअ़ पर एक वज्द सा त़ारी था, हर त़रफ़ **मरह़बा** की धूमें मची थीं, शाहे ख़ैरुल अनाम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में दुरूदो सलाम के गुलदस्ते पेश किये जा रहे थे, आ़शिक़ाने रसूल की आंखों से सैले अश्क रवां थे, हर त़रफ़ से आहों और सिस्कियों की आवाज़ें आ रही थीं, मुझ पर भी अ़जीब कैफ़ो मस्ती त़ारी थी, मेरी गुनहगार आंखों ने हर त़रफ़ हलकी हलकी बुंदकियां और ख़ुश गवार फुवार बरस्ती देखी, गोया सारे का सारा इज्तिमाअ़ बाराने रह़मत में नहा रहा था, मैं सर की आंखें बन्द किये **प्यारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ह़सीन तसव्वुर में गुम दुरूदो सलाम पढ़ने में मश़्ग़ूल था। यकायक दिल की आंखें खुल गईं, सच कहता हूं, जिस का जश्ने विलादत मनाया जा रहा था उसी प्यारे प्यारे आक़ा मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझ सरापा गुनहगार व सज़ावारे ज़म पर करम बालाए करम फ़रमा दिया, और मुझे अपना जल्वए ज़ेबा दिखा दिया, اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कलेजा ठन्डा हो गया।** वाक़ेई उस इस्लामी भाई ने बिल्कुल सच कहा था कि दा'वते इस्लामी का **इज्तिमाए मीलाद** तो ह़स्बे साबिक़ सोज़ो रिक़्क़त वाला ही है मगर हमारी अपनी कैफ़िय्यत बदल गई है अगर हम मुतवज्जेह रहें तो आज भी उन के जल्वे आ़म हैं।

आंख वाला तेरे जोबन का तमाशा देखे दीदए कूर को क्या आए नज़र क्या देखे

कोई आया पा के चला गया, कोई उ़म्र भर भी न पा सका

येह बड़े करम के हैं फ़ैसले, येह बड़े नसीब की बात है

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

जश्ने विलादत मनाने की 13 निय्यतें

﴾1﴿ हुक्मे कुरआनी وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ﴿۱۱﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** और अपने रब की ने'मत का ख़ूब चरचा करो। (پ۳۰، الضحیٰ:۱۱)) पर अ़मल करते हुए **अल्लाह** पाक की सब से बड़ी ने'मत का चरचा करूंगा ﴾2﴿ रिज़ाए इलाही पाने के लिये जश्ने विलादत की ख़ुशी में लाइटिंग करूंगा ﴾3﴿ जिब्रईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام ने शबे विलादत जो तीन झन्डे गाड़े थे इस की पैरवी में झन्डे लहराऊंगा ﴾4﴿ धूमधाम से जश्ने विलादत मना कर कुफ़्फ़ार पर अ़ज़मते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का सिक्का बिठाऊंगा (घर घर चराग़ां और सब्ज़ झन्डे देख कर कुफ़्फ़ार यक़ीनन ह़ैरान होते होंगे कि मुसल्मानों को अपने नबी की विलादत से वालिहाना प्यार है) ﴾5﴿ ज़ाहिरी सजावट के साथ साथ तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़रीए अपना बात़िन भी सजाऊंगा ﴾6﴿ बारहवीं रात को इज्तिमाए़ मीलाद और ﴾7﴿ ईदे मीलादुन्नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के दिन निकलने वाले जुलूसे मीलाद में शिर्कत कर के ज़िक्रे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सआ़दतें और ﴾8﴿ उ़लमा और ﴾9﴿ नेक लोगों की ज़ियारतें और ﴾10﴿ आ़शिक़ाने रसूल के क़ुर्ब की बरकतें ह़ासिल करूंगा ﴾11﴿ जुलूसे मीलाद में ह़त्तल इम्कान बा वुज़ू रहूंगा और ﴾12﴿ मस्जिद की नमाज़े बा जमाअ़त तर्क नहीं करूंगा ﴾13﴿ ह़स्बे तौफ़ीक़ "तक़्सीमे रसाइल" करूंगा। (या'नी मक्तबतुल मदीना के रसाइल वग़ैरा जुलूसे मीलाद में तक़्सीम करूंगा)

या रब्बे मुस्त़फ़ा ! हमें ख़ुशदिली और अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ **जश्ने विलादत** मनाने की तौफ़ीक़ मर्ह़मत फ़रमा और जश्ने विलादत के सदक़े हमें जन्नतुल फ़िरदौस में बे ह़िसाब दाख़िला इ़नायत कर।

बख़्श दे हम को इलाही ! बहरे मीलादुन्नबी नामए आ'माल इ़स्यां से मेरा भरपूर है

(वसाइले बख़्शिश, स. 477)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

रबीउ़ल अव्वल का मीलाद शरीफ़

(अज़ : ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान علیہ رحمۃ الحنان)

रबीउ़ल अव्वल बारहवीं तारीख़ ह़ुज़ूरे अन्वर صلی اللہ علیہ والہٖ وسلم की विलादते पाक की ख़ुशी में रोज़ा रखना सवाब है मगर बेहतर है कि दो रोज़े रखें और इस महीने में मह़फ़िले मीलाद शरीफ़ करने से तमाम साल घर में बरकतें और हर त़रह़ का अम्न रहता है।

(روح البیان، پ۲۶، الفتح: تحت ۹، ۹/۵۶ ملخصاً)

इस का बहुत तजरिबा किया गया है और ग्यारहवीं, बारहवीं तारीख़ों की दरमियानी रात को तमाम रात जागे, इस रात में ग़ुस्ल करे, नए कपड़े बदले, ख़ुश्बू लगाए, विलादते पाक की ख़ुशी करे और बिल्कुल ठीक सुब्ह़े सादिक़ के वक़्त क़ियाम और सलाम करे। اِنْ شَآءَاللّٰہ जो भी नेक दुआ़ मांगे क़बूल होगी। बहुत ही मुजर्रब है। ए'तिक़ाद शर्त़ है। ला दवा मरीज़ और बहुत मुसीबत ज़दों पर आज़्माया गया, दुरुस्त पाया मगर क़ियाम और सलाम का वक़्त निहायत सह़ीह़ हो।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 132)

M.R.P. ₹ 00/-

DAWAT-E-ISLAMI

Maktabatul Madina
Mohammad Ali Road, Mandvi Post Office, Mumbai 9022177997, 9320558372
Faizane Madina, Teen Koniya Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad 9327168200
421, Urdu Market, Matia Mahal, Near: Noor Guest House, Jama Masjid, Delhi
011-23284560, 8178862570 For Home Delivery: 9978626025 *T&C Apply
feedbackmmhind@gmail.com www.dawateislamihind.net